Dr. Madan Paswan, History.

Class: B.A. Part - II (Hons.) Paper - IIIrd.

Topic: Saiyyed Dynasty.

Lecture No. 31

Date: 26-09-2020

Continue Lecture....

निजामुद्दीन अहमद के अनुसार, " राज्य के कार्य दिन-प्रतिदिन अधिक अव्यवस्थित होते गये और ऐसी अवस्था आ पहुँची कि दिल्ली से 20 कोस दूर के भी सरदारों ने भी लड़खड़ाते हुए साम्राज्य की अधिकतर रूपों में आकर अधीनता अस्वीकार कर दी और इसके प्रतिकार की तैयारियों में लग गये।"

अलाउद्दीन शाह (1443-51 ई०):

(1.) 1443 ई० में मुहम्मद शाह की मृत्यु के बाद उसका पुत्र अलाउद्दीन शाह आलम की उपाधि से राज्य का शासक बना।

(2.) उसके शासक बनते ही राज्य की आर्थिक स्थिति स्थितियों में उत्तरोत्तर रूप से बढ़ोतरी हुआ और राज्य की आर्थिक राजकोषिक खजाना भड़ने लगी।

(3.) उसके राज्य में अब केवल दिल्ली शहर तथा आस-पास के गाँव बच गये थे। इनके शासन काल में गाँव की सामाजिक सांस्कृतिक स्थितियों में एक सामान्यतया काफी सुदृढ़ता प्रदान करनी प्रारंभ होती गयी जिसके माध्यम से गाँव की स्थिति सही होती गयी।

इन सैयद वंश के शासकों ने अपने महत्वपूर्ण स्थितियों के माध्यम से काफी विस्तृत तरीकों के माध्यम से अपने राज्य की प्रशासनिक व्यवस्थाओं को सुदृढ़ता प्रदान करती गयी। इनमें सबसे महत्वपूर्ण शासक मुबारकशाह थे जिन्होंने मुबारकबाद शहर की स्थापना की।

अलाउद्दीन शाह ने सन् 1451 ई० में दिल्ली का सिंहासन बहलोल लोदी को दिया एवं शासन संभालते ही दिल्ली की आर्थिक, सामाजिक स्थितियों के साथ-साथ प्रशासनिक सुधारों के जरिये

Continue...

अपने राज्य को सुदृढ़ता प्रदान किये। इसके बाद अलाउद्दीन शाह राज्य की आर्थिक अवस्था को सुचारु रूप से बढ़ाने के बाद वे स्वयं बदायूँ चला गया।

— Dr. M. Paswan, History Department
D. B. College; Jaynagar Madhubani.